शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 मई 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

प्रेमचंद के उपन्यासों में ग्रामीण जीवन

गणेश भंवर (शोधार्थी)
डॉ.ज्योति सिंह (निर्देशक)
तुलनात्मक भाषा एवं संस्कृति अध्ययन शाला
देवी अहिल्या विश्वविद्यालय
इन्दौर, मध्यप्रदेश, भारत

शोध संक्षेप

उपन्यास सम्राट मुंशी प्रेमचंद ने अपने लेखन में भारतीय ग्रामीण जीवन का जीवंत चित्रण किया है। साहित्य को समाज से जोड़ने का काम प्रेमचन्द ने किया। उन्होंने किसानों के समस्याओं को अनेक प्रकार से रूपायित किया है। उनके साहित्य में देसी मिटटी की सुगंध को आसानी से महसूस किया जा सकता है। उन्होंने शोषण के जिन तरीकों को बताया है, कमोबेश वही तरीके आज भी दिखाई दे जाते हैं। प्रस्तुत शोध पत्र में इसी पर विचार किया गया है।

प्रस्तावना

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। वस्तुतः वह समाज का एक अभिन्न अंग है। जन्म से ही मनुष्य समाज में रहता है। अपने आचार-विचार, रहन-सहन, भाषा-शैली एवं व्यवहार के आधार पर मनुष्य सामाजिक संबंधों का निर्वाह करता है। मानव के बिना समाज के अस्तित्व की कल्पना ही असंभव है। अतः मानव और समाज का संबंध अन्योन्याश्रित है। समाज में रहकर मानव परस्पर सहयोग से अपनी समस्याओं एवं आपदाओं को दूर करने का प्रयत्न करता है। सामाजिक संबंधों के आधार पर ही मनुष्य अपने उद्देश्यों की पूर्ति में भी लगा रहता है। मनुष्य के स्वभाव एवं व्यवहार के आधार पर समाज में विभिन्नता एवं समानता को देखा जा सकता है। इसी के फलस्वरूप मानव के उद्देश्य आचार-विचार, संस्कार एवं दृष्टि में परिवर्तन हो जाता है। अतः हमारा भारत देश एक कृषि प्रधान देश है, क्योंकि भारत की 70 प्रतिशत जनसंख्या कृषि पर निर्भर है एवं आधी से ज्यादा जनसंख्या गाँवों में निवास करती है। अनेक साहित्यकारों ने ग्रामीण जीवन पर समय-समय पर अपनी लेखनी चलाई है। जिनमें प्रेमचंद सर्वप्रथम ऐसे लेखक हैं, जिन्होंने ग्रामीण जीवन को अपने साहित्य का विषय बनाया और कृषक जीवन के दुःखों को समाज के सामने लाये।

प्रेमचंद का ग्रामीण जीवन से निकट का सम्पर्क था। किसानों के प्रति प्रेमचंद ने कोरी बौद्धिक सहानुभूति प्रदर्शित नहीं की है वरन् बड़े ही यथार्थ ढंग से उसकी दुर्बलताओं, विशेषताओं और समस्याओं पर भी प्रकाश डाला है। प्रारंभ से ही वे गाँवों को दृष्टि में रखकर उपन्यास लिखते रहे और 'गोदान' तक आते-आते उनकी दृष्टि ग्रामीण जीवन के प्रत्येक पहलू पर अच्छी तरह प्रकाश डालती है। किसानों से संबंधित उनके निम्नलिखित उपन्यास विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। 'वरदान', 'सेवासदन', 'प्रेमाश्रम', 'रंगभूमि', 'कायाकल्प', 'कर्मभूमि' और 'गोदान'।

ग्रामीण जीवन की व्याख्या के लिए उसके निम्नलिखित विभाग किए हैं :

1. व्यक्ति किसान
2. आर्थिक स्थिति
3. शोषण
4. किसानों की समस्याओं के निराकरण का मार्ग

जहाँ तक व्यक्ति किसान का संबंध है, प्रेमचंद ने उसकी चारित्रिक, अंधविश्वासों तथा उसकी दुर्बलताओं पर स्पष्ट रूप से लिखा है।

भारतीय ग्रामीण जनता अंधविश्वासी होती है। प्रेमचंद ने ग्रामीण जनता के अंधविश्वासों का जगह-जगह वर्णन किया है तथा 'वरदान' में कमला के नाम बिराजन के पत्र शीर्षक से सत्रहवें परिच्छेद में कहा है, "हमारे घर के पिछवाड़े एक गडढे में चुडैलें नहाने आया करती हैं और वे अकारण राह चलने वालों से छेड़छाड़ किया करती हैं। इसी प्रकार द्वार पर एक भारी पीपल का पेड़ है, वहां भूतों का आवास है। पीपल का त्रास सारे जीवन के हृदय पर ऐसा छाया हुआ है कि सूर्यस्त ही से मार्ग बंद हो जाता है।"1

आगे चलकर 'रंगभूमि' में भी ग्रामीणों के अंधविश्वासों का उल्लेख मिलता है। पूर्वजन्म पर विश्वास भी एक अंधविश्वास ही समझा जाता है। आधुनिक शिक्षा प्राप्त लोगों में पूर्व जन्म पर विश्वास बहुत कम पाया जाता है।

'रंगभूमि' का सूरदास पूर्व जन्म पर अटल आस्था रखते हैं। सुभागी उसके चोरी हुए रुपयों का भेद उसे बता देती है जिस पर सूरदास कहते हैं,म "मेरे रुपये ये ही नहीं शायद उस जन्म में मैंने गोरों के रुपये चुराए होंगे।"2

जीवन के अनेक थपेड़ों ने वास्तव में ग्रामीण जनता को भाग्यवादी और पूर्व जन्म का विश्वासी बना दिया है। शताब्दियों से उनका शोषण हुआ है। जमींदार के पांव तले गर्दन दबी होने के कारण वे अपने अधिकारों तक की मांग करने में डरते हैं। 'गोदान' के छोटे अनेक स्थलों पर अपनी डरपोक मनोवृत्ति का परिचय देता है। क्या यह मिलते जुलते रहने का प्रसाद है कि अब तक जान बची हुई है, नहीं तो कहीं पता नहीं लगता कि किधर गये।"

प्रेमचंद ने कृषक के स्वभाव और जीवन पर जगह-जगह बड़े मनोयोग से लिखा है। किसान की आर्थिक स्थिति भी उनकी आँखों से ओझल नहीं रही।

'गोदान' कृषक जीवन का महाकाव्य है। 'होरी' का जीवन तत्कालीन भारत के लाख-लाख किसानों का जीवन है। प्रेमचंद होरी की शोचनीय आर्थिक दशा का चित्रण करते हुए लिखते हैं। एक तो जाड़े की रात दूसरी माघ की वर्षा। मौत सा सन्नाटा छाया हुआ था। होरी भोजन करके पुनिया के मटर के खेत की मेड़ पर अपनी मडैया में लेटा हुआ था। चाहता था शीत को भूल जाए और सो ले लेकिन तार-तार कम्बल फटी हुई मिर्जई और शीत के झोलों से गीली पुआल इतने शत्रुओं के सम्मुख आने का नींद में साहस न था। भारतीय किसानों की सबसे ज्वलंत समस्या ऋण के बोझ से मुक्त होने की है। प्रेमचंदकालीन ही नहीं, बल्कि आज भी अधिकांश किसान महाजनी सभ्यता के पाट के नीचे बुरी तरह से पिस रहे हैं। प्रेमचंद ने बताया है कि इन किसानों के लिए कर्ज वह मेहमान है जो एक बार आकर जाने का नाम नहीं लेता। 'गोदान' का 'होरी' बहुत कुछ ऋण भार के कारण ही आजन्म कष्ट उठाता है और अपने जीवन को नष्ट कर लेता है।

एक और ऋण का बोझ और दूसरी और जमींदारों के अत्याचार। जब तक किसान बड़े जमींदारों के चुंगल से मुक्त नहीं हो जाता, तब तक उनकी समस्याएँ सुलझ नहीं सकती।

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 मई 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

"जमींदारों के बावन हाथ हो जाते हैं।"3

उनके हाथों में किसानों को किसी न किसी बहाने फंसाने का सामर्थ्य रहता हैं।

इस प्रकार प्रेमचंद ने किसान वर्ग के जीवन की विस्तृत झांकी अपने उपन्यासों में चित्रित की है। किसानों की अनेक समस्याओं का सम्यक उद्घाटन करने के बाद वे उसके हल का उपाय भी सुझाते हैं। वास्तव में किसानों की प्रमुख समस्या आर्थिक है, जब तक किसान का शोषण बंद नहीं होता, तब तक उनकी दशा में कोई सुधार नहीं हो सकता। इसलिये किसान का शोषण करने वाले वर्ग का नारा होना क्रांतिकारी व्यक्तित्व देखने योग्य है। किसान के हृदय और मस्तिष्क से सर्वप्रथम भय को दूर करना आवश्यक है। तभी वह शोषण का बुलंदी से सामना कर सकता है। दूसरा उसका शिक्षित होना भी अनिवार्य है।

दुनिया के अन्य देशों के किसान आंदोलनों की जानकारी मिलते रहने पर भारतीय किसान भी अपने अधिकारों के लिए संघर्ष कर सकता है। गोदान में धनिया और गोबर का व्यक्तित्व भी ऐसा ही है। धनिया की स्पष्ट मान्यता है,

"हमने जमींदार के खेत जोते हैं, तो वह अपना लगान ही तो लेगा। उसकी खुशामद क्यों करें ? उसके तलवे क्यों सहलावे।"4

प्रेमचंद ने किसानों की मात्र दयनीय दशा का ही चित्रण नहीं किया, प्रत्युत उनमें उभरते हुए क्रांतिकारी विचारों को भी व्यक्त किया है। प्रेमचंद का साहित्य शोषित किसानों को सजग करता है। साथ ही उन्हें अपने अधिकारों के पाने के लिए संगठित होने में प्रेरणा देता है। आंदोलनों को बल पहुंचता है।

प्रेमचंद एक ऐसे युग के लेखक हैं जिसमें शब्द और कर्म में न्यूनतम दूरी होती है। ऐसे ही लेखकों को जनता का पर्याप्त सम्मान मिलता है।

प्रेमचंद की आधुनिकता अन्वेषण ही नहीं परिवर्तन भी है, समाज में नयी चेतना के विकास से ही मध्यवर्ग अपनी सामाजिक भूमि का विस्तार कैसे करें, गरीब कृषक राजनैतिक नेतृत्व की अगली कतार में खुद कैसे सामने आये, बुनियादी मानवीय मूल्यों और विस्तार कैसे हो, सामाजिक परिवर्तन की ये समस्याएँ उनके आधुनिक दृष्टिकोण का विस्तार करती है, आधुनिक को जनजीवन से जोड़ती है।

प्रेमचंद जी के सभी उपन्यासों में सभी तरह के पात्र हैं और सभी तरह की समस्याएँ हैं, उनमें शिक्षितों और अशिक्षितों की अपनी-अपनी रीति-नीति और अपनी-अपनी लालसाएँ हैं। यही कारण है कि सबकी अपनी-अपनी कठिनाइयाँ हैं। उनमें किसानों और जमींदारों की चर्चा है उनकी सम्पत्ति और विपहित्त विलास और त्याग उत्पीड़न और उदारता का वर्णन है। उनमें सेवा की महत्ता और क्रान्ति के विद्रोह का भाव भी है। ग्रामीण जीवन का चित्रण करने में प्रेमचंद अग्रदूत है। जमीन जोतने वाला या कुदाली चलाने वाला व्यक्ति शोषण का सबसे अधिक शिकार है। उनकी दरिद्रता और भूख का उन्होंने वर्णन विस्तार से किया है। वह जमीन जोतता, बीज बोता परन्तु जिनका फसल पर कोई अधिकार नहीं होता। गाँवों को आदर्श बनाने की बात उन्होंने अपने उपन्यासों में बार-बार कही है।

प्रेमचंद ने देहात की दरिद्रता का सजीव और करुण चित्रण आंका है। किसान के घर में न धातु के बर्तन है न बिस्तर हैं और ना ही खाट। बेचारे असहाय देहाती लोग रोग और मृत्यु के दीर्घकालीन उदासीनता और परम्परागत शान्ति के साथ देखते रहते है। वे इन विपदाओं और

दूसरी बाधाओं को इस प्रकार सहते है, मानो ये अवश्यम्भावी हों। सामाजिक रीति-रिवाज उन्हें भारी ऋण से जकड़ देते हैं। विवाह जन्म और मृत्यु के कुछ ऐसे अवसर हैं, जब उन्हें अपनी शक्ति से अधिक काम करना पड़ता है। वे साहूकारों से रुपया उधार लेने को विवश होते हैं। वे ऋण चुकाने के लिए अपने जानवरों और अपने बर्तनों और अपने घर तक को बेचने के लिए बाधित होते हैं।

निष्कर्ष

इस प्रकार देहाती जीवन का चित्रण करते हुए प्रेमचंद ने लोगों को दो वर्गों में बाँटा है-शोषक और शोषित।

प्रेमचंद सुधार के ऐसे सुझाव पेश करते हैं, जिनसे गरीब किसानों का भला हो सकता है। इन गरीबों की आर्थिक स्थिति को सुधारने के लिए लेखक गाँवों में औद्योगिकरण के पक्ष में नहीं हैं। उन्होंने घरेलू उद्योग-धंधों मशीन द्वारा निर्मित वस्तु और विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार का समर्थन किया। जीवन की आर्थिक समस्या पर अधिक बल दिया। उन्होंने अपने उपन्यासों और कहानियों में इसलिये स्थान दिया कि इससे उत्साही मध्यवर्ग का ध्यान उन नई समस्याओं पर केन्द्रित हो जाए जो पूँजीवादी सभ्यता के कारण उत्पन्न हो गई थी। उन्होंने अपना ध्यान प्रमुख रुप से भारतीय किसान पर केन्द्रित किया।

संदर्भ ग्रंथ

1. वरदान, प्रेमचंद, पृष्ठ 80
2. रंगभूमि, प्रेमचंद, पृष्ठ 280
3. वरदान, प्रेमचंद, पृष्ठ 158
4. कर्मभूमि, प्रेमचंद, पृष्ठ 03